27 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बीजरूप स्थिति तथा अलौकिक अनुभूतियों का अनुभव

मैं आत्मा स्वयं को देख रही हूं

- मैं बीज हूं
  - → मैं निराकार वतन से
  - → आवाज के परे दुनिया से आई हूं
- कल्प समाप्त हो रहा है
  - → बाबा लेने आए हैं
  - → अब घर वापस जाना है
  - → अपने हर विस्तार को समेट
    - आवाज से परे हो
    - वापस जाना है
- क्या मैं रेडी हूं
- क्या मैं एवर रेडी हूं

हर विस्तार का सार बीज है

- मैं बिंदु आत्मा
- इस शरीर में पार्ट बजाती आत्मा
  - → आदि से लेकर अब तक के 84 जन्मों को देख रही हूं
  - → मुझ बीज से निकले वृक्ष को देख रही हूं
  - → मुझ बीज के विस्तार को देख रही हूं
    - कितनी शाखाएं हो गई है
    - विकर्मों के बन्धनों की शाखायें,
    - कर्मभोग की शाखायें
    - हिसाब किताब की शाखाएं
    - यह वृक्ष जड़जड़ीभूत हो गया है
- अब मैं घर जाने की तैयारी कर रही हूं
- मैं पुरुषार्थ द्वारा
  - → एक एक कर इन शाखाओं को काट रही हूं
  - → और इन शाखाओं के अंश और वंश को
    - पूरी तरह से समाप्त कर रही हूँ
- अपने पुरुषार्थ की कमी को साक्षी होकर देख रही हूं
  - → और हर कमी को दूर करते हुए
    - तीव्रता से अपनी मंज़िल की ओर अग्रसर हूँ
  - → किसी भी प्रकार का तमोप्रधान वायुमंडल
    - मुझे स्व पुरुषार्थ के इस श्रेष्ठ मार्ग पर
    - आगे बढ़ने से नहीं रोक पा रहा है
- मैं इन्हें भस्म करने की ओर अग्रसर हूं
  - → मैं आत्मा बीज रूप में स्थित हो
  - → बीज रूप बाप से लगन लगा कर
    - लगन की अग्नि द्वारा
    - पवित्र अग्नि द्वारा

- शक्तिशाली अग्नि द्वारा

→ इस वृक्ष को

→ देह रूपी तने से निकली हर शाखा को

→ देह के हिसाब की शाखा को

→ देह के सम्बन्धों की शाखा को

→ पदार्थों में बन्धनी आत्मा बनने की शाखा को

→ भक्ति मार्ग और गुरूओं के बन्धनों के विस्तार की शाखा को

→ विकर्मों के बन्धनों की शाखा को

→ कर्मभोग की शाखा को

- भस्म कर रही हूं

→ बाकी रह गई

- मैं बिंदु आत्मा
- मैं बीज आत्मा

मैं बीज रूप में स्थित हूं

→ बीज रूप बाप के साथ जाने के लिए

>>> बीज रूप अवस्था और अलौकिक अनुभूतियां

मैं बीज रूप अवस्था में

→ स्पष्ट रूप से देख रही हूं

→ अनुभव कर रही हूं कि

- मैं अलग और यह देह अलग है

→ मैं चैतन्य हूं

- यह शरीर जड़ है

→ मैं हर कर्म करते

- इस देह से न्यारी हूं
- इस शरीर से न्यारी हूं

→ यह शरीर मेरा वस्त्र है

→ मैं शरीर से

- शरीर के हर विस्तार से अलग हूं

मैं परमधाम वासी हूं

→ मैं आत्मा पार्ट बजाने के लिए

- साकारी दुनिया में आई हूं

→ कर्म योगी बन कर्म करती हूं

→ सदा स्मृति में है कि

- मैं परमधाम वासी हूं

→ मैं दिव्य बुद्धि धारी आत्मा बुद्धि योग द्वारा

- सदा बाप के साथ रहती हूं
- कभी सूक्ष्म वतन में रहती
- कभी मूल वतन में रहती

→ मैं एवर रेडी आत्मा फुर्सत का हर पल

- बाप के साथ गुजारती हूं

मैं आत्मा स्वयं को पहचानती हूं

अपने स्वरूप को जानती हूं

→ मैं स्वयं का ही साक्षात्कार कर रही हूं

→ मेरा स्वरूप मेरे समक्ष

- साक्षात है

→ अपनी हर शक्ति का अनुभव कर रही हूं
→ अपने ज्योति स्वरूप का अनुभव कर रही हैं हूं
→ बाबा की किरणों का
→ बाबा के स्वरूप का अनुभव निरंतर कर रही हूं
→ किसी भी अल्पकाल के साक्षात्कार की

- आस नहीं
- दरकार नहीं

→ मैं साक्षात् आत्म-अनुभवी हूं

➢➢ मैं बंधन मुक्त आत्मा हूं

➻_ ➻ मैं उड़ता पंछी हूं

➻_ ➻ साइलेंस की शक्ति द्वारा

→ मैं विकारों के आकर्षण से परे
→ प्रकृति के आकर्षण से परे

- उड़ती जा रही हूं

➻_ ➻ मैं हर विस्तार को समेट

→ बीज रूप में स्थित हूं

➻_ ➻ मैं बाप समान

→ एवररेडी आत्मा हूं

➻_ ➻ मैं बाबा के साथ जाने को तैयार हूं

→ मैं और बाबा चलते-फिरते जा रहे हैं

- उड़ रहे हैं

→ बाप भी बिन्दु
→ मैं भी बिन्दू

- दोनों साथ-साथ जा रहे हैं